International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 04(II), October - December, 2022, pp. 31-33

चुरू की प्रमुख देवलियॉ एवं छतरियॉ

डॉ. अमित मेहता*

प्रस्तावना

राजस्थान शूरवीरों की भूमि है। अपनी जन्म–भूमि के लिए युद्ध करने वालों की स्मृति में देवलियां या छतरियां बनवाई जाती थी।(1) राजस्थान में स्मारक निर्माण की परम्परा प्राचीन काल से ही चली आ रही है। प्रारम्भ में ये स्मारक स्थापत्य की दृष्टि से साधारण बनाये जाते थे परन्तु मुसलमानों के आगमन के बाद ये स्माधि स्मारक उनके स्माधि स्मारकों से प्रेरित होकर विशाल और शान–शौकत वाले निर्मित किये जाने लगे। जिनमें मुगल शैली की प्रधानता देखी जा सकती है।(2) देवलियों या छतरियों का स्थापत्य मंदिर के मंडप या खुले बरामदे की तरह का होता है। ये संगमरमर के पत्थर, वंशी के पत्थर या जैसलमेर के पीले पत्थर पर बनी मुगल या राजपूत कला का समन्वय प्रस्तुत करती है। अनेक छतरियों के स्तम्भ सुन्दर गुम्बद, राजपूती मेहराब, मूर्तियों तथा बेल–बुटों युक्त रमणीय दिखते है।(3) **होवार्ड कार्टर** के अनुसार इन स्मारकों का उद्देश्य मृत व्यक्तियों के निरीक्षण के साथ–साथ यह दिखाने के लिए भी था कि मृतकों को भूला नहीं दिया गया है। उनकी स्मृति को स्थायी करके रखना भी एक उद्देश्य था।(4) सर्वप्रथम लार्ड कर्जन ने स्थापत्य के इन जीते–जागते प्रमाणों की सुरक्षा हेतु प्राचीन स्मारक सुरक्षा अधिनियम बनाया था।(5) चुरू में स्थनीय शासकों, सामन्तों एवं सम्पन्न वर्ग के लोगों की स्मृति में स्मारक बनाये जाते रहे हैं। साथ ही धर्माचार्यो के स्मारक बनाने की परम्परा भी यहॉ सदियों से विद्यमान हैं।(6) यहॉ की छतरियां, स्मारक–स्तम्भ, यूप–स्तम्भ, गोवर्धन–स्तम्भ, कीर्ति–स्तम्भ, देवलियां आदि दर्शनीय है। स्थापत्य की इन रचनाओं से यहां के लोगों की भावनाओं का ज्ञान, सभ्यता और संस्कृति के दर्शन होते हैं तथा इसके साथ ही निर्माण कला की स्मृति भी जीवित रहती है। चुरू में अनेक छतरियां एवं देवलियां है जिनमें से प्रमुख का विवरण इस प्रकार है–

तीन देवलियॉ

चुरू में पांवटा कुँए के समीप ठाकुरों का श्मशान घाट बताया जाता है। यहॉ उनकी स्मृति में अनेक छतरियो का निर्माण करवाया गया था परन्तु समय की मार और उचित देख–रेख के अभाव में आज ये छतरियां नष्ट हो चुकी है। लोगों का कहना है कि ये छतरियां लाल पत्थर की बनी हुई थीं । इन पर नृत्य–संगीत, पशु–पक्षी, बेल–बुटे, फूल–पत्तियां आदि के भित्ति चित्र उत्कीर्ण थे। यहॉ पर एक छोटी गुमटी में पत्थरों पर उत्कीर्ण **तीन देवलियॉ** स्थित थी जिन्हें कालान्तर में निर्मित मड़दा के महासती मन्दिर में प्रतिष्ठित कर दिया गया। इनमें से एक देवली काफी घिस चुकी है। दूसरी देवली जो पीले पत्थर ये निर्मित है, में एक घुड़ सवार के सामने एक स्त्री हाथ जोडे हुए खड़ी है। देवली के ऊपरी भाग में सूरज और चांद उत्कीर्ण है। तीसरी देवली बलुआ पत्थर से निर्मित बतायी जाती है। इस देवली में भी एक घुड़सवार के सामने एक स्त्री हाथ जोडे हुए खड़ी है। इस देवली पर एक लेख भी उत्कीर्ण है।(7)

किले की देवली

चूरू के किले के उत्तरी भाग में भगवान दास बागला द्वारा निर्मित अस्पताल के पिछे की ओर मेहता मेघराज की साभिलेख देवली व एक पुराना कुँआ है।(8) बीकानेर की ओर से लड़ते हुए मेहता मेघराज चूरू के बाजार में कार्तिक शुक्ल 8, रविवार 1874 को मारे गये थे।

* सहायक आचार्य, राजकीय कला महाविद्यालय, सीकर, राजस्थान।

लखोटियों का देवली

चूरू के बाजार की उतरी दिशा में लखोटियों की कुलदेवी संचायमाता के मंदिर में लखोटिया सांवतसिंह की देवली है। ये संवत् 1858 (1801 ई.) में जुझार हुए थे। देवली पर केवल नाम और संवत् ही उत्कीर्ण है।(9)

टकणेतों की छतरी

यह छतरी पुरानें श्मशान घाट में स्थित है। इसका निर्माण बक्शीराम टकणत के पुत्रों ने उनकी स्मृति में संवत् 1833 में करवाया था। यह छतरी दो मंजिला है। इसमें अनेक भित्ति चित्र बने हुए है जिनका सम्बन्ध पौराणिक आख्यानों व तात्कालीन समाज व संस्कृति से है। इस छतरी में इसके निर्माण से सम्बन्धित एक लेख भी उत्कीर्ण है।

मंत्रियों की छतरी

चुरू में मंत्रियों **का** पुराना श्मशान घाट माहेश्वरियों के अहाते में होना बताया जाता है। यहां मंत्री परिवार के दिवंगत सदस्यों की स्मृति में छतरियों का निर्माण करवाया था। ये छतरियां आकार में छोटी है। गौशाला मार्ग पर मंत्रियों **की विशाल** छतरी निर्मित है। इसका मुख्य द्वार पूर्वाभिमुखी है। छतरी के नीचे शिवालय तथा गौरी शंकर जी का मंदिर निर्मित है। यह दो मंजिला है जिस पर जाने के लिए सीढ़ियां बनी हुई है। यह छतरी भित्ति चित्रों से सुसज्जित है। इसके कीर्ति–स्तम्भ लेख को पढ़ने से ज्ञात होता है कि इस छतरी का निर्माण सं. 1928 में 6700 रूपये की लागत से करवाया गया था। गौशाला मार्ग पर ही तेजपाल लोहिया की बगीची के पास मंत्री परिवार **की दूसरी विशाल** छतरी निर्मित है। यह छतरी दो मंजिला है। यह सुन्दर भित्ति चित्रों से सुसज्जित है। छतरी के पास एक कुँआ भी निर्मित है। यह स्थान "नाथो की बगीची" के नाम से भी प्रसिद्ध है क्योंकि पहले यहां पर नाथ सम्प्रदाय के साधु–संत निवास करते थे।(10)

पौद्दारों की छतरी

यह छतरी चुरू में सेखसरियों के कुँए के पास स्थित है। यह एक **विशाल** दो मंजिला छतरी है। इसे "बावन खंभे वाली छतरी" भी कहा जाता है। इसका निर्माण सेठ जालीराम पौद्दार की स्मृति में करवाया गया था। इस छतरी के **विशाल गुम्बद में 16 ताखें है जिनमें एक ताख में** छतरी के निर्माण से सम्बन्धित लेख उत्कीर्ण है। जबकि शेष ताखों में बेल–बुटों के चित्र चित्रित है। छतरी के पास कुँआ, कुण्ड़, शिवालय व हनुमान मंदिर भी बने हुए है।

भगवान दास बागला के डंडे की छतरी

यह स्थल हिन्दुओं का सर्वाजनिक श्मशान घाट है। इसके चारों ओर मजबूत दीवार व द्वार का निर्माण चुरू के राय बहादूर सेठ भगवान दास बागला ने करवाया था। इसी कारण यह स्थान "भगवान दास बागला के डंडे" के नाम से जाना जाता है। यहां पर अनेक छतरियां व चबूतरें निर्मित है। इन पर स्मारक लेख भी उत्कीर्ण करवाये गये थे परन्तु समय की मार व उचित देख–रेख के अभाव में आज अधिकांश लेख अपढ़नीय व नष्ट हो चुके है। इस डंडे में सबसे बड़ी विशाल छतरी का निर्माण रामरिख दास भावसिंह की स्मृति में करवाया गया था। यह छतरी 12 खम्भों पर आधारित है। इस छतरी में राधा–कृष्ण की रासलीला से सम्बन्धित चित्र चित्रित है। इनके अतिरिक्त इस छतरी में 24 अवतारों के बने हुए चित्र भी दर्शनीय है। इस छतरी में एक स्मारक लेख सं. 1960 का उत्कीर्ण है।

लोहियों की छतरी

चुरू में केशोराय जी लोहिया एवं उनके ज्येष्ठ पुत्र जीवण राम लोहिया की स्मृति में बनी छतरियां भगवान दास बागला के अहाते में स्थित है। इनके अलावा इस परिवार से सम्बन्धित एक छतरी गौशाला मार्ग पर व अन्य छतरियां जौहरी सागर जोहड़े के समीप बनी हुई है। गौशाला मार्ग पर बनी लोहियों की छतरी के समीप एक कुण्ड़, पायतण व हनुमान मंदिर भी निर्मित है। इस छतरी से कुछ आगे चलने पर लोहिया की बगीची व कुँआ निर्मित है। इस बगीची को "बंजारों की बगीची" के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि यहां पर बंजारों की समाधियां निर्मित है। जौहरी सागर जोहड़े के समीप बनी छतरी के नीचे एक शिवालय है। तथा इसकी ऊपरी मंजिल पर जाने के लिए सीढ़ियां बनी हुई है। छत के चारों ओर गुमटियों के बीच लोहिया परिवार के दिवंगत

सदस्यों की स्मृति में दो छतरियां और उनके बीच में एक अष्ठखम्भा बना है जिस पर एक लेख उत्कीर्ण है। इस अष्ठखम्भें के दाहिनी ओर आशाराम जी लोहिया और बांई ओर जोखी राम जी लोहिया की छतरियां है। शिवालय के समीप यहां पर कुण्ड़ व पायतण बने हुए है।

भगवान दास बागला की छतरी

लोहियों की छतरी की पूर्वी दिशा में भगवान दास बागला की धर्मशाला के निकट यह छतरी निर्मित है। यहां पर एक शिवालय और संगमरमर की छोटी छतरी निर्मित है। इस छतरी पर इसके निर्माण से सम्बन्धित एक लेख उत्कीर्ण है।

टाई वालों की छतरी

यह छतरी रमनचंद जी मंड़ावा वाले की धर्मशाला के निकट स्थित है। इस छतरी के नीचे एक शिवालय है। इसके 16 स्तम्भों के ऊपर दो मंजिला छतरी निर्मित है। इस छतरी के ऊपर सीढ़ियों द्वारा पहुंचा जाता है। यह छतरी सुन्दर भित्ति चित्रों से सुसज्जित है। इसके चारों तरफ छोटी बुरालियां, छतरियां व गुमटियां बनी हुई है। इसके मुख्य गुम्बद में संवत् 1946 का एक लेख उत्कीर्ण है।[11]

यति ऋद्दिकरण की छतरी

यह छतरी जौहरी सागर जोहड़े के पश्चिम में स्थित यति जी के बगीचे में निर्मित है। इस बगीचे (दादा–बाड़ी) में अनेक जैन संतों की साभिलेख चरण पादुकाऐं प्रतिष्ठित है। इस बगीचे के दक्षिणी द्वार से प्रवेश करने पर दाहिनी ओर सफेद संगमरमर के चबूतरे पर चार स्तम्भों पर आधारित यह छतरी है। छतरी में यति ऋद्दिकरण की साभिलेख चरण पादुकाऐं प्रतिष्ठित है। यति ऋद्दिकरण जी अपने समय के सुयोग्य और कुशल चिकित्सक थे।

माहेश्वरी के डंडे की छतरी

चुरू में मुरीदों के मोहल्ले के निकट माहेश्वरी के डंडे में कुछ छतरियां बनी हुई है इनमें से सबसे पुरानी छतरी संवत् 1815 की कृपा राम पेड़ीवाल की है। इस डंडे में राम दास जी मंत्री की स्मृति में भी एक अष्ठखम्भी छतरी निर्मित है। यहां पर मंत्रियों की 2 अन्य छतरियां वि. स. 1848 की भी है।

खेमका की छतरी

चुरू में माहेश्वरी के डंडे के समीप सीताराम लच्छी राम खेमका की छतरी निर्मित है। इसके नीचे एक शिवालय निर्मित है। यह छतरी आठ खम्भों पर आधारित है। इसके गुम्बद में इसके निर्माण से सम्बन्धित एक लेख उत्कीर्ण है।[12]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. बघेला, डॉ. हेतसिंह – राजस्थान इतिहास की रूपरेख,I पृ.70–71
2. शर्मा जी.एन. – राजस्थान का इतिहास, पृ. 557–558
3. नीरज शर्मा, डॉ. जयसिंह, डॉ. बी.एल. – राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा, पृ. 37
4. होवार्ड कार्टर, कैसल एण्ड कोम्पट – दी टोम्ब ऑफ तुलअख – आमेन, खण्ड–2, पृ. 7
5. गुप्ता, मोहन लाल – संस्कृति के स्वर, पृ. 57
6. शर्मा व्यास, डॉ. कालूराम, डॉ. प्रकाश – राजस्थान स्थापत्य कला, पृ. 445
7. प्रत्यक्ष दर्शन के आधार पर
8. अग्रवाल गोविन्द – चुरू मण्ड़ल का शोधपूर्ण इतिहास, पृ. 317
9. अग्रवाल गोविन्द – चुरू मण्ड़ल का शोधपूर्ण इतिहास, पृ. 319
10. प्रत्यक्ष दर्शन के आधार पर
11. प्रत्यक्ष दर्शन के आधार पर
12. प्रत्यक्ष दर्शन के आधार पर

❖◆❖